हिन्दी

Based on Prof. Dr. Dhara Bhatt

360 वास्तु ज्ञान

VAASTU IN 21 DAYS

सूत्र - भवन निर्माण के

1

लाभकारी ऊर्जा का फायदा उठाने के लिए उत्तर और पूर्व को हलका या खुला रखते हुए भवन का निर्माण इस प्रकार करें जिससे कि भवन की स्थिति सदैव दक्षिण-पश्चिम में हो।

2

हमेशा दक्षिण की बजाय उत्तर दिशा में तथा पश्चिम की बजाय पूर्व दिशा में खुला स्थान अधिक रखना चाहिए ।

ढाल (स्लोप)

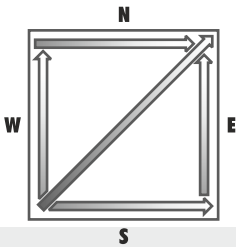

3

पश्चिमी भाग उठा हुआ-पूर्व की तरफ ढलान: भौतिक सुख,समृद्धि में वृद्धि करता है।

4

दक्षिणी भाग उठा हुआ-उत्तर की तरफ ढलान: धन-संपत्ति और ख्याति लाता है ।

5

पूर्वी भाग उठा हुआ-पश्चिम की तरफ ढलान: संपत्ति के लिए हानिकारक ।

6

उत्तरी भाग उठा हुआ-दक्षिण की तरफ ढलान: निवासियों के लिए हानिकारक ।

7

पूर्वोत्तर भाग उठा हुआ-दक्षिण पश्चिम की तरफ ढलान बुरी होती है ।

8

दक्षिण-पूर्व भाग उठा हुआ-उत्तर पश्चिम की तरफ ढलान ठीक है ।

9

उत्तर-पश्चिमी भाग उठा हुआ-दक्षिण पूर्व की तरफ ढलान ठीक ठाक है ।

10

दक्षिण-पश्चिमी भाग उठा हुआ - उत्तर पूर्व की तरफ ढलान श्रेष्ठ है ।

11

दक्षिण-पूर्व तथा पूर्व भाग उठा हुआ - पश्चिम तथा उत्तर पश्चिम नीचा/ढालू होना मनुष्यों के लिए उचित नहीं होता ।

12

दक्षिण व दक्षिण पूर्व (अग्नि) भाग उठा हुआ- उत्तरी व उत्तर पश्चिम (वायव्य) का नीचा होना श्रेष्ठ रहता है। इससे सभी गतिविधियों में आपके नाम व सम्मान में वृद्धि होती है ।

13

दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण भाग उठा हुआ-उत्तरी और उत्तर पूर्व का नीचा होना श्रेष्ठ रहता है। इसमें निवास करने वाले वृद्धि को प्राप्त होते हैं अर्थात पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र आदि की कुल वृद्धि तथा आयु दीर्घ होती है । ऐसे प्लॉट में लंबी आयु का वरदान फलित होता है।

14

पश्चिम और दक्षिण पश्चिम भाग उठा हुआ- उत्तर पूर्व और उत्तर का नीचा होना उचित है । इसमें रहने वाले सुख पूर्वक आराम से जीवन यापन करते हैं ।

15

पश्चिम और उत्तर पश्चिम भाग ऊँचा- उत्तर पूर्व और दक्षिण-पूर्व नीचा हो तो वहाँ उत्तेजना एवं विद्वेष का वातावरण रहता है, लड़ाई-झगड़ा तथा हाय-हाय/हो-हल्ला करते जीवन बीतता है।

16

उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम ऊँचा- दक्षिण तथा दक्षिण- पूर्व नीचा हो तो बीमारियाँ घेर लेती हैं।

17

उत्तर तथा उत्तर-पूर्व ऊँचा दक्षिण से दक्षिण पश्चिम तक नीचा हो तो सत्यानाश हो जाता है।

18

पूर्व से पूर्वोत्तर तक उठा हुआ- पश्चिम से दक्षिण-पश्चिम तक नीचा हो तो परिवार के लिए क्षयकारक है, अर्थात नाश करता है।

पूर्वोत्तर

19

प्रार्थना कक्ष/पूजा कक्ष और ध्यान कक्ष के लिए श्रेष्ठ रहता है।

20

प्रात: ०३ से ०६ बजे तक इस जगह भरपूर ऊर्जा रहती है।

21

बाल्कनी, बरामदा पोर्च, घर के द्वार के लिए उपयुक्त है।

22

कार्यालय में यह स्थान मंदिर, स्वागत कक्ष, सोने-चांदी और आध्यात्मिक वस्तुओं के लिए श्रेष्ठ है।

23

प्रशासनिक क्षेत्र और हलकी चीजों की (साइकिल और स्कूटर) पार्किंग भी यहाँ की जा सकती है।

24

भूमिगत टैंक, तरण ताल (स्वीमिंग पूल) और फव्वारे (फाउण्टैन्स) के लिए उपयुक्त जगह होती है मगर सावधान: ये सब मर्म रेखा से जुड़े नहीं होने चाहिए यानी दो विपरीत कोनों-उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम से जुड़े न हों ।

25

यहाँ रसोई तथा ऊपर की टंकी (ऑवर हैड टैंक) नहीं बनाना चाहिए।

26

वास्तु के अनुसार यहाँ शौचालय तो बिलकुल नहीं बनाया जाना चाहिए।

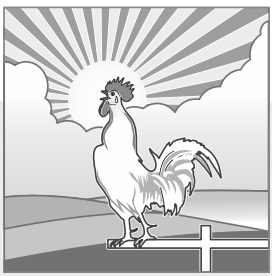

जीवंत वास्तु सूत्र

जल्दी उठें

जल्दी उठने को केवल एक आदत नहीं बल्कि इसे अपनी लाइफ स्टाइल बनाएँ। जल्दी करने का यह मतलब नहीं है कि प्रात: जल्दी उठें! इसका वास्तविक मतलब है कि दूसरों से जल्दी उठें और नए अवसरों की तलाश में जुट जाएँ अर्थात नए अवसरों पर अपनी बाज नज़र रखें।

27

यहाँ भारी वस्तुएँ न रखी जाए तथा इसे हवादार तथा हलका रखें।

28

इस क्षेत्र में किसी प्रकार की समस्या होने पर स्वास्थ्य संबंधी बाधा रहती है, जैसे- अनिद्रा, सिरदर्द, मस्तिष्क में रक्तस्राव, स्ट्रॉक, मानसिक बीमारी और वंध्यता(बांझपन) आदि ।

29

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र कमजोर होने से भ्रम की स्थिति, निर्णय लेने की क्षमता का अभाव, वित्तीय समस्याएँ, शादी-ब्याह संबंधी मामले, मेलजोल का अभाव या अपनी बात पर अड़े रहना तथा परिवार में छोटे बेटे की समस्या।

पूर्व

30

प्रवेश, खुली जगह और डेक/छत, घी और तैल का संग्रह कक्ष और अतिथि कक्ष के लिए श्रेष्ठ है ।

31

प्रात: ०६ से ०९ बजे तक इस जगह भरपूर ऊर्जा रहती है ।

32

यह सूर्योदय की दिशा होती है। अत: यह स्वास्थ्य, सुरक्षा, प्रसन्नता तथा कीर्तिदायक है।

33

कार्यालयों में यह कंप्यूटर कक्ष, मानव संसाधन तथा स्टेशनरी रखने के लिए उपयुक्त माना जाता है।

34

बैठक आयोजित करने, चर्चा कक्ष तथा प्रदर्शन क्षेत्र के रूप में श्रेष्ठ स्थान होता है।

35

दिन की बेहतर शुरूआत के लिए में अपने सिर को पूर्व दिशा में रखते हुए सोना चाहिए।

अनंत का प्रतीक वास्तु

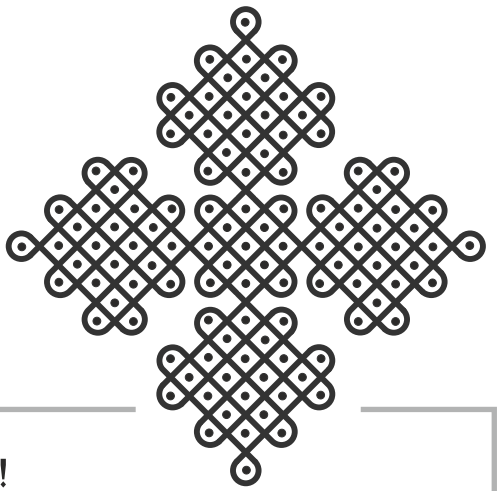

यह प्रयास करके देखें !

मुख्य द्वार अपाको सभी बुरी ऊर्जाओं से बचाता है तथा आपके संपूर्ण कल्याण के लिए मंगलकारी शुभ ऊर्जाओं को अंदर आने देता है। अत: जागरुक बने मुख्य द्वार पर प्रेम और दुलार से प्रतिदिन एक ऊर्जा चित्र बनाएँ। सलाह है कि आप चित्र बनाने के लिए कच्चे चावलों की पेस्ट का प्रयोग करें।

36

जहाँ ऊर्जा एवं तेजस्विता की जरूरत वाले कक्ष,जैसे-अध्ययन कक्ष या बैठक कक्ष बनाए जाने चाहिए।

37

यहाँ अविवाहित पुत्री का शयन कक्ष बनाया जाना श्रेष्ठ होता है।

38

इस स्थान में किसी प्रकार की समस्या होने पर निम्नलिखित समस्याएँ हो सकती हैं- पाचन एवं भूख, दाहिनी ओर का ऊपरी शरीर, यकृत (लीवर), एवं पित्ताशय (गाल ब्लेडर) तथा अनेक बार गर्भाशय का केंसर आदि।

39

पूर्व की स्थिति कमजोर होने पर निम्नलिखित समस्याएँ हो सकती हैं - परिवार के बड़े-बुजुर्गों के साथ, सास के साथ झगड़े, नाम और पहचान कमाने में कठिनाई और परिवार के सबसे बड़े बेटे को तकलीफ।

दक्षिण-पूर्व

40

रसोई तथा अग्नि जलाने के स्थान के लिए श्रेष्ठ। यह स्थान भाग्य एवं समृद्धि प्रदान करने वाला होता है, जिसमें सन्निहित हैं - वित्त ,स्वास्थ्य, ज्ञान, सौंदर्य, शक्ति तथा प्रसिद्धि।

41

विद्युत मीटर,सर्किट ब्रेकर्स, बॉयलर्स, इन्वर्टर तथा जेनरेटर के लिए उपयुक्त स्थल।

जीवंत वास्तु सूत्र

बिना कार्य किए सपने देखना-

दिवास्वप्न दर्शन उचित है। ये अवसरों के लिए नए-नए द्वार खोलते हैं। सभी नेक इरादे बिना क्रियाशीलता के व्यर्थ हो जाते हैं। अपने सपनों को साकार करने के लिए आपको मनोयोग पूर्वक प्रयास करना होगा अर्थात् परिश्रम ही सफलता की जादूई छड़ी होती है।

42

यहाँ भूगर्भ पानीकी टंकी तथा कूआँ न बनवाया जाए ।

43

इस स्थान पर टॉयलेट बनाया जा सकता है बशर्तेकि यह रसोई की कॉमन दीवार के साथ लगा हुआ न हो।

44

प्रात: ०९ बजे से दोपहर १२ बजे तक इस स्थान पर भरपूर ऊर्जा रहती है।

45

लड़कियों की सौंदर्य वृद्धि के लिए उनका शयन कक्ष यहाँ बनाया जा सकता है किंतु सावधानी रखनी चाहिए कि क्या उसका स्वभाव अधिक संवेदनशील तो नहीं है।

46

यह गति एवं संबंधों का कोना भी माना जाता है अत: कार्यालयों में यह स्थान टेलीफोन ऑपरेटर और जनसंपर्क विभाग के लिए श्रेष्ठ रहता है।

47

कैंटीन, स्वर्णकार का कार्य, ब्यूटीपार्लर, लेखा विभाग, विद्युत उपकरण, तैयार माल तथा गार्ड रूम के लिए श्रेष्ठ।

48

इस स्थान पर किसी प्रकार की समस्या होने पर निम्नलिखित स्वास्थ्य संबंधी बाधाएँ पैदा हो सकती हैं, जैसे-गर्भपात से संबंधित वंध्यता (बांझपन) और घुटनों में दर्द ।

49

दक्षिण-पूर्व की स्थिति कमजोर होने पर निम्नलिखित समस्याएँ हो सकती हैं - उपयुक्त जीवन साथी मिलने में कठिनाई, पति-पत्नी के बीच सैक्स रूचि में कमी/आवेग में कमी, क्रोध संबंधी मामले, विवाहेत्तर संबंध और आत्महत्या-प्रवृत्ति तथा सबसे बड़ी बेटी को तकलीफ।

दक्षिण

50

सीढ़ियों, लिफ्ट, प्रोवीजन/स्टोर रूम (भंडार कक्ष) और भारी चीजों के लिए उपयुक्त।

51

कार्यालयों में यह मालीक एवं कार्मिक विभाग, लेखापरीक्षा और विधि विभाग, उच्च स्तरीय अधिकारियों के केबिन के लिए श्रेष्ठ। भवन निर्माण सामग्री, केमीकल्स और अर्ध तैयार माल के भंडारण के लिए श्रेष्ठ तथा पार्किंग के लिए आबंटित स्थान के रूप में उपयुक्त रहता है।

दरवाजे की सुरक्षा के लिए स्वस्तीक

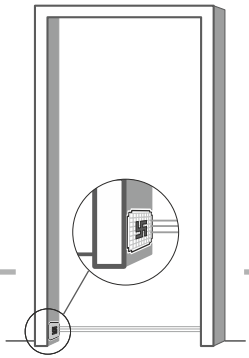

यह प्रयास करके देखें !

घर के मुख्य द्वार पर नीचे प्लेटनुमा फ्रेम युक्त दहलीज होनी चाहिए। नहीं होने पर घर में अनेक बाधाएँ आती है। अत: ऊर्ध्वाधर फ्रेम के तल पर एक-दूसरे की तरफ मुँह किए हुए दो लाल रंग के स्वास्तिक स्थापित करें।

52

इस स्थान को खाली नहीं रखा जाना चाहिए तथा यहाँ बेसमेन्ट तो बिलकुल ही नहीं होना चाहिए।

53

अपरा १२ बजे से ०३ बजे तक इस स्थान पर भरपूर ऊर्जा रहती है।

54

लाभकारी ऊर्जा को बनाए रखने के लिए दक्षिणी क्षेत्र का ऊँचा एवं बंद होना अच्छा रहता है। दक्षिण में पीठ रखते हुए इस प्रकार बैठने से बुद्धि, ज्ञान तथा शक्ति प्राप्त होती है जिससे बुरी चीजें दूर रहती है।

55

यहाँ शयनकक्ष होने पर गुस्सा आता है तथा जजमेंटल प्रवृत्ति बंद हो जाती है।

56

इस क्षेत्र में किसी प्रकार की समस्या होने पर निम्नलिखित समस्याएँ होती हैं- नेत्र, हृदय और बैचेनीकारक लैग सिन्ड्रोम तथा रात्रि में लैग एवं काफ दर्द।

57

दक्षिण की स्थिति कमजोर होने पर निम्नलिखित समस्याएँ हो सकती हैं - मानहानि, काम के पूरे होने में कठिनाई,वित्तीय नुकसान,कानूनी समस्याएँ, पुलिस जाँच तथा बीच वाली लड़की को तकलीफ।

दक्षिण-पश्चिम

58

सभी शयनकक्ष, अलमारी, ड्रैसिंग रूम, ओवर हैड टैंक(ऊपर रखी टंकियाँ), सीढ़ियाँ, पुस्तकालय तथा पुस्तक रखने की जगह (ताक) के लिए श्रेष्ठ।

Walking

जीवंत वास्तु सूत्र

नई आदत बनाएँ

आदतें ताकतवर होती हैं। हम बिना विचार किए यंत्रवत अपना रोजमर्रा (रूटीन)का बहुत-सा काम करते हैं। जब आप अपने जीवन में कुछ नई सकारात्मक आदत शुरू करते हैं या जोड़ते हैं तो इससे दिनभर आपका जबरदस्त उत्साहवर्धन होता रहता है। हमें एक नई आदत डालने में रात्र २१ दिन लगते हैं।

59

कार्यालयों में यह स्थान अध्यक्ष कक्ष, प्रबंध निदेशक, प्रवर प्रबंधकों, भंडार गृह भारी चीजों और यंत्रों, चर्म कार्य, कच्चे माल के भंडार और आउट साइड भंडार के लिए उपयुक्त रहता है।

60

इस जगह को हल्का तथा खाली न रखें एवं यहाँ तहखाने, तलकक्ष, कूएँ, शौचालय तथा नौकर-कक्ष तो बिलकुल न बनवाए जाएँ।

61

अपरा ०३ बजे से ०६ बजे तक इस स्थान पर भरपूर ऊर्जा रहती है ।

62

जो व्यक्ति पितृ शक्ति/ऊर्जा से किसी का भय और फोबिया भगाने का काम करता हो तो उसके लिए यह उपचार कक्ष के लिए उपयोगी रहता है।

63

इस क्षेत्र मे किसी प्रकार की समस्या- दूर्घटना (पूनरावर्तन), पैरो में दर्द और अस्थि भंग, पथरी और गुर्दे की समस्याएँ, असंतुलित शुगर या रक्तचाप जैसे स्वास्थ्य संबंधीत समस्याओंका कारण बन सकती है।

64

इस क्षेत्र में किसी प्रकार की समस्या होने पर निम्नलिखित समस्याएँ/दोष/बीमारियाँ हो सकती हैं- धन प्रवाह रुक जाना, अधिक खर्च के कारण धन का बाह्य प्रवाह अधिक, ऋण चुकाने में अक्षमता, पत्नी या घर की महिला को तकलीफ।

पश्चिम

65

खाने का कक्ष, अध्ययन कक्ष, संतान गतिविधि कक्ष, ऊपर की टंकी, सामाजिक कार्य या आनंद मनाने का कक्ष, परिवार कक्ष और टेलीविजन कक्ष के लिए श्रेष्ठ।

66

कार्यालय भवन में साझीदार का कार्यालय/कक्ष बनाने, स्नानघर, खजांची कक्ष, विभाग प्रमुख, महाप्रबंधक, भंडार, शो-केश एवं प्रदर्शन वस्तु और बीच की मंजिल बनाने के लिए उत्तम स्थान है।

67

कृषि उत्पाद की दुकान, दवा और फार्मेशी एवं हार्डवेयर की दुकान के लिए उत्तम स्थान

68

शाम को ०६ बजे से ०९ बजे तक इस स्थान पर भरपूर ऊर्जा रहती है।

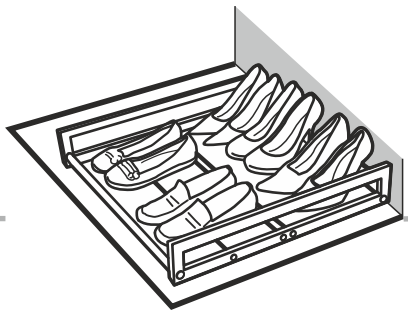

यह प्रयास करके देखें !

जूते चप्पल घर के बाहर खोल कर आने की सिफारिश की जाती है मगर संभव नहीं होने पर एक पतली ताँबे की पट्टी उस क्षेत्र के बचाव के लिए फिक्स कर दें।

69

व्यापारियों, ट्रेवल एजेन्सी, रक्षा कर्मचारियों तथा संचार कार्य से जुड़े लोगों के लिए बहुत उपयुक्त है।

70

इस क्षेत्र में किसी प्रकार की समस्या होने पर निम्नलिखित स्वास्थ्य तकलीफें हो सकती हैं - पुरुष अंगों से संबंधित, छाती एवं श्वसन समस्याएँ।

71

पश्चिम की स्थिति कमजोर होने पर निम्नलिखित समस्याएँ हो सकती हैं - गरीबी, धन का अपव्यय या क्षीण होना तथा सबसे छोटी बेटी को तकलीफ।

उत्तर-पश्चिम

72

बैठक कक्ष, धोने का क्षेत्र, सेप्टिक टैंक और नवविवाहित जोड़े के लिए शयनकक्ष बनाए जाने के लिए श्रेष्ठ स्थान।

73

रसोई, पेन्ट्री तथा स्वागत कक्ष के लिए दूसरा सर्वोत्तम विकल्प माना जा सकता है।

74

कार्यालय में विपणन और विज्ञापन विभाग, तैयार माल सुपूर्दगी और प्रेषण विभाग, आगंतुक बैठक, हल्की चीजों का भंडार तथा गार्ड कक्ष के लिए यह जगह उत्तम है।

75

किसी व्यापारिक परिसर में यह स्थान वाहनों के प्रदर्शन कक्ष तथा ट्रेवल एजेन्सी के लिए उत्तम रहता है।

जीवंत वास्तु सूत्र

सुविचार से सुप्रभात का शुभारंभ

जो कुछ आप प्रात: बोलते हैं वह सारे दिन आपके साथ रहता है (अत: झगड़े से अपने दिन की शुरूआत कभी न करें!) जब आप शीशे के सामने खड़े होकर तैयार हो रहे हों तो इस सुप्रभात-शक्ति का लाभ लेकर एक सकारात्मक विचार का चिंतन करके बाहर निकलें, कार्यारंभ करें।

Get my book of 108 Affirmations

76

यह त्वरित निपटान करने वाला क्षेत्र हातेा है। अत: यह मेहमान कक्ष तथा शादी योग्य बेटी के शयन कक्ष के लिए उत्तम माना जाता है।

77

रात ९ बजे से मध्यरात्रि के बीच इस स्थान पर भरपूर ऊर्जा रहती है।

78

इस स्थान में किसी प्रकार की समस्या होने से फेफड़ों में तकलीफ पैदा हो सकती है।

79

उत्तर-पश्चिम की स्थिति कमजोर होने से निम्न-लिखित समस्याएँ हो सकती हैं- कानूनी तथा कर्ज संबंधी विवाद, न्यायालय-मामले लंबे समय तक लटक जाते हैं तथा कोई समाधान नहीं निकलता, अति विश्वास की समस्याएँ। परिचित या अपरिचित मित्रों से कोई मदद नहीं और पिता के लिए तकलीफ।

उत्तर

80

कोष, उद्यान, पोर्च एवं प्रवेश, परिवार कक्ष, बैठक और विवाहित पुत्र के शयन कक्ष के लिए श्रेष्ठ स्थान।

81

कुबेर का स्थान होने के कारण यह आपको धन, संपदा और समृद्धि प्रदान करता है।

82

इस क्षेत्र को हल्का तथा खुला रखना उत्तम है। अत: बैठक कक्ष, विद्यार्थी कक्ष और अधिक उम्र वाले तथा किशोरों के लिए शयन कक्ष बनाने के लिए उपयुक्त रहता है।

83

कार्यालय में यह लेखा विभाग, कनिष्ठ कर्मचारियों, टंकक, रोकड़ काउण्टर, बिक्री एवं वित्त विभाग तथा सभाहॉल के लिए सर्वोत्तम रहता है।

84

बेसमेन्ट व कार पार्किंग क्षेत्र के लिए यह ठीक जगह होती है।

85

अर्धरात्रि से प्रात: ३ बजे के बीच इस स्थान पर भरपूर ऊर्जा रहती है।

86

इस क्षेत्र में शौचालय तथा रसोई न बनाई जाए।

यह प्रयास करके देखें !

सूर्योदय से पूर्व जग जाएँ। सूर्य आपकी परम प्रेरक शक्ति हैं। हमेशा दस मिनट अपने आपको संपूर्ण विश्वास से भर लें। इससे आपकी सारी समस्याएँ हल हो सकती है। यदि संभव है, सूर्य को जल का अर्ध्य दें इस से जीवनी शक्ति बढ़ती है।

87

उच्च मानसिक/आध्यात्मिक गतिविधियों में लगे लोग जैसे -
शिक्षण संस्था प्रमुख, पुजारी, वैज्ञानिक, ज्योतिषी आदि को बैठने के लिए यह क्षेत्र बहुत लाभकारी रहता है।

88

इस क्षेत्र में किसी समस्या के होने से रक्त, नेत्र, तथा किडनी संबंधी स्वास्थ्य तकलीफें हो सकती हैं।

89

उत्तर की स्थिति कमजोर होने से निम्नलिखित समस्याएँ पैदा हो सकती हैं-
मौद्रिक सस्या जीवन में सेक्स/प्रवेग की कमी, कर्ज चुकाने में कठिनाई तथा गरीबी और बीच वाले बेटे के लिए तकलीफ।

केंद्र

90

यह स्थल ब्रह्म के लिए नियत किया गया है और इसीलिए यह सीधे ब्रह्माण्ड से जुड़ा है। अत: इसे या तो खुला रखना चाहिए या इसे बिना किसी निर्माण और अड़चन वाला रखना चाहिए।

91

तुलसी का पौधा लगाने के लिए यह श्रेष्ठ स्थान है और समारोह और उत्सव मनाने के लिए उचित स्थान है।

92

कार्यालय में अनुसंधान व विकास विभाग, सभा कक्ष और सजावट के लिए यह बहुत उपयुक्त रहता है।

93

स्नान घर और शौचारय, रसोई, अग्नि स्थल, भारी चीजें, भारी यंत्र, बीम या कॉलम यहाँ नहीं होने चाहिए।

94

यहाँ भारी वस्तुएँ, भंडार, शौचालय, रसोई होने से निम्नलिखित समस्याएँ पैदा हो सकती हैं - रीढ़ की हड्डी, पेट की बीमारी और परिवार में लगातार बीमारी लगी रहती है।

95

केंद्रस्थान के कमजोर होने से काफी समस्याएँ हो सकती हैं, जैसे-आत्म सम्मान, डर, विश्वास में कमी डरे-डरे रहने और रोके हुए की भावना।

मुख्य द्वार और अन्य द्वार

96

मुख्य द्वार को पूरे घर का मुख माना जा सकता है। अत: वास्तु में दिखाए अनुसार उपयुक्त दिशा में खुलना चाहिए।

97

अपने घर के बाहर एक नेम प्लेट लगाने की सलाह दी जाती है ताकि आपको ढूंढे जाने में यह मददगार बने।

98

मुख्य द्वार के ऊपर हमेशा प्रकाश रहना चाहिए। से अंधेरे में कभी भी नहीं रखा जाना चाहिए।

99

घर के मुख्य द्वार की मध्य रेखा घर की लंबाई या चौड़ाई के बिल्कुल बीचोंबीच नहीं पड़नी चाहिए।

100

वास्तु के अनुसार दो घरों के लिए एक ही कॉमन मुख्य द्वार (साथ ही उन दोनों परिवारों में दो अलग-अलग रसोई भी प्रयुक्त होती हों) की अनुमति नहीं दी जा सकती क्योंकि इससे गलतफहमी बढ़ती है।

101

घर के सामने से पिछवाड़े तक एक ही कतार में ३ या अधिक द्वार होना अशुभ होता है।

102

अपने घर के प्रत्येक तल (फ्लोर) पर किसी भी समय ५ से अधिक दरवाजे खुले न रखें। अधिकतम ५ दरवाजे खुले रखे जा सकते हैं।

103

सभी द्वार घर के अंदर की तरफ तथा सभी खिड़कियाँ बाहर की तरफ खुलनी चाहिए।

104

घर के मुख्य द्वार का आकार शेष सभी कमरों के द्वार के आकार से बड़ा होना चाहिए तथा मुख्य द्वार दो पल्लों वाला होना चाहिए।

105

सर्वोत्तम प्रवेश या मुख्य द्वार वह माना जाता है जो पुर्वाभिमुखी हो जिससे होकर सूर्य किरणें घर में आए तथा सकारात्मक ऊर्जा तथा समृद्धि लाए।

106

एक उत्तर दिशा वाला द्वार पूर्ण भौतिक सुख, सुविधा/संपत्ति लाता है।

107

पश्चिम दिशा वाले मुख्य द्वार के घर का मुखिया दूर-दूर की यात्रा पर ही रहता है।

जीवंत वास्तु सूत्र

अपनी और दूसरों कि गलतियों को स्वीकार करें

हम इंसान हैं और गलतियाँ इंसानों से ही होती है। यदि आप गलत होते हैं तो अपनी गलती स्वीकार कर लीजिए तथा अगली बार (गलती सुधारते हुए) बेहतर करने का प्रयास कीजिए। हमेशा अपने आप को कोसना (दंडित करना) छोड़िए। उसी प्रकार दूसरे भी इंसान ही है। उनकी गलतियों को भी स्वीकार करें।

108

दक्षिण-पश्चिम मुखी मुख्य द्वार वाले घर में जीवन कठिनाइयों एवं संघर्ष से भरा होता है।

109

दक्षिण मुखी मुख्य द्वार के घर में व्यक्ति का सामाजिक जीवन बहुत अधिक सक्रियतावाला होता है। इस कारण से परिवार की शांति भंग रहती है और विवाद, तर्क-वितर्क तथा असहमति बनी रहती है।

110

दक्षिण-पूर्वी मुख्य द्वार के कारण घर में बीमारियाँ, क्रोध और कानूनी झगड़े/कोर्ट-कचहरी के मामले चलते रहते हैं।

111

दक्षिण-पूर्वी मुख्य द्वार होने से अग्नि-दुर्घटनाएँ होने की संभावना होती है।

112

खाना खाने का कक्ष कभी भी मुख्य द्वार से सीधे दिखाई नहीं देना चाहिए क्योंकि इससे घर में असंतोष पनपता है।

113

द्वार खोलने पर यदि वह आवाज करता है या फर्श पर घिसता है तो नकारतामकता आती है तथा लाइलाज त्वचा-रोग पैदा हो जाते हैं।

114

आपका द्वार हमेशा आयताकार आकार में होना चाहिए और वर्गाकार तथा अर्धवृत्ताकार दरवाजों से सावधान रहना चाहिए।

115

प्रत्येक तल पर द्वारों की संख्या सम संख्या में होनी चाहिए मगर ऐसी सम संख्या में द्वार नहीं हो जिनके अंत में शून्य लगता हो, जैसे १०, २० आदि।

116

सीधे द्वार की तरफ पैर करके न सोएँ, इसे स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती है।

117

ऐसे ना बैठकर काम करें कि दरवाजा एकदम आपके पीछे हो क्योंकि इससे आपके पीठ में छूरा भोंकने और पीठ पीछे छलकपट करने के काम हो सकते हैं।

118

याद रखें कि गंदे और अव्यवस्थित या बदबूदार जूते या चप्पल, मुख्य द्वार के पास नहीं रखे जाने चाहिए, इससे नकारात्मक ऊर्जा आती है। इन्हें द्वार से थोड़ी दूरी पर रखें या बंद अलमारी में रखें।

119

घर के प्रवेश द्वार के पास कोई झाड़ू, पौछा सामान आदि नही रखना चाहिए। इससे घर में झगड़े होने लगते हैं। मुख्य द्वार के सामने अड़चने /वेध (द्वार वेध)

संपन्नता का स्रोत

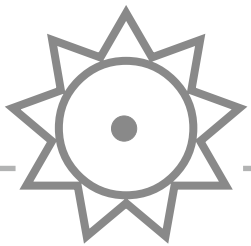

यह प्रयास करके देखें !

सूर्य हमारे लिए ऊर्जा का स्रोत है। जीवन में किसी भी प्रकार की नकारात्मकता या अड़चनों को दूर करने के लिए रसोई के दक्षिण-पूर्व कोने में सूर्य का प्रतीक चित्र बनाएँ और सूर्य देव क प्रति श्रद्धा विश्वास रखते हुए एक दीया जलाएँ। वह सभी आवश्यकताएँ पूरी कर देता है।

मुख्य द्वार के सामने अड़चने /वेध
(द्वार वेध)

120

आपके मुख्य द्वार के बाहर का क्षेत्र साफ-सुथरा एवं खुला होना चाहिए।

121

आपके घर की ऊँचाई से दुगुनी दूरी पर यदि कोई वेध हो तो आप पर प्रभाव नहीं पड़ेगा।

122

मुख्य द्वार के एकदम सामने कोई पेड़ हो तो दूसरे बच्चों की शिक्षा प्रभावित होती हैं।

123

मुख्य द्वार के सामने कोई नाला या ट्रांसफोर्मर हो तो बीमारियाँ आती है तथा स्वास्थ्य खराब रहता है।

124

मुख्य द्वार के सामने कोई केनाल (नहर) हो तो इस कारण रुपए-पैसे टिकते नहीं बल्कि हाथ से दूर चले जाते हैं।

125

मुख्य द्वार के सामने कोई कुआँ, हैंड पम्प और नल हो तो व्यापार में घाटा होता है और वित्तिय अड़चनें सामने आती हैं।

126

मुख्य द्वार के सामने कोई कुआँ, हैंड पम्प और नल हो तो व्यापार में घाटा होता है और वित्तिय अड़चनें सामने आती हैं।

जीवंत वास्तु सूत्र

समझदारीपूर्ण लचीलापन

जीवन में प्रसन्नता ही हमारा अंतिम लक्ष्य होता है। अपने लक्ष्यों पर अटल रहें ताकि आप इन्हें त्याग न दें किंतु अपने लक्ष्य तक पहुँचने वाले साधनों में लचीलापन रखें। अपनी चेतना को समस्या से हटाकर समाधान पर रखें।

127

मुख्य द्वार के सामने कोई मंदिर, बड़े ऊँचे भवन या ऊँची दीवार होने से उन्नति रुक जाती है।

128

आपके मुख्य द्वार के एकदम सामने कोई सड़क जानी हो तो दीर्घायु घट जाती है।

129

मुख्य द्वार के सामने कहीं कोई पानी का रिसाव या ठहराव हो तो यह घर के बच्चों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

130

मुख्य द्वार के सामने कीचड़, रेत या ईंटें पड़ी रहती हो तो इससे प्रगति बाधित हो जाती है। रुक जाती है।

131

मुख्य द्वार पर जर्जर आवाज करने वाली, किसी टूटे हुए पुराने घर की सामग्री, पुराने घर की खरीदी चीजे, तोड़े गए जहाज के भाग को यदी लगा लिया जाए तो इससे व्यापार में हानि यहाँ तक की निरंतर हानियों के कारण व्यापार को बंद करना पड़ सकता है।

132

मुख्य द्वार के सामने कोई टेलीफोन या बिजली का खंभा हो तो घर में बीमारियाँ या स्वाथ्य्य समस्याएँ बनी रहती हैं।

133

मुख्य द्वार के सामने सैप्टिक टैंक या अंडरग्राउंड टैंक हो तो घर में स्थायी रुप से धन की कमी बनी रहती है।

134

घर के सामने आटा-चक्की हो तो जीवन अव्यवस्थित रहता है तथा घर के सदस्यों के बीच आपसी विवाद बना रहता है।

135

मुख्य द्वार के सामने ट्रॉसफोर्मर होने के कारण परिवार के सदस्यों के बीच शत्रुता एवं विद्वेष बना रहता है।

136

आपके मुख्य द्वार के बिलकुल सामने यदि चौकीदार का कक्ष, भंडार या गेरेज हो तो निरंतर धन की कमी बनी रहती है।

बाडे की दिवार (कंपाऊंड वाल)

137

बाडे कि दीवार सभी घरों में जरूरी होती है। यदि नहीं है तो तारों या पेड़ों या पिरामिड आदि से फैन्सिंग कर ली जाए यानी दीवार बना ली जाए।

138

पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख वाले घरों के मुख्य द्वार की ऊँचाई अधिक होती तथा बाडे की ऊँचाई उससे कम रहनी चाहिए।

विघ्न निवारण तथा चतुर्दिक सफलता के लिए देव गणेश

यह प्रयास करके देखें !

जीवन में सभी कठिनाइयों पर विजय पाने के लिए तथा सर्वतोमुखी सफलता एवं उन्नति के लिए अपने शयनकक्ष के दक्षिण-पश्चिम कोने में आसन सहित सफेद संगमरमर की एक छोटी गणेश मूर्ति स्थापित करे और प्रतिदिन एक फूल संभव हो तो लाल फूल उन्हें अर्पित करें।

139

दक्षिण या पश्चिम अभिमुखी घरों की बाडे की ऊँचाई उस घर के मुख्य द्वार से कम या अधिक हो सकती है।

140

यदि आपकी दक्षिण या पश्चिम की बाडे की दीवार या पूरा दक्षिण-पश्चिम गिर जाए तो इसे तुरंत पुन: बना दिया जाए अन्यथा इससे आपको तनाव तथा धन-हानि होगी।

141

दो कंपाऊंड द्वार बनाए जाएं, एक कार आदि के लिए तथा दूसरा घर के सदस्यों के आने-जाने के लिए।

142

प्लोट के एकदम कोनों में कंपाऊंड द्वार न बनाए जाएँ।

143

कंपाऊंड द्वार और मुख्य द्वार इस प्रकार बनाएँ कि दोनों एक दिशा में ही खुले मगर एक - दुसरे के बिल्कुल सामने नही खुलने चाहिए। आपकी चार दिवारी का द्वार मुख्य द्वार से स्पष्ट देखा जा सके, ऐसा होना चाहिए।

144

बाडे का द्वार हमेशा क्लोकवाइज खुलना चाहिए।

145

दक्षिण वाला बाडे का द्वार आपके जीवन में जोखिम/खतरे, दुर्घटनाएँ तथा अड़चने लाता है।

जीवंत वास्तु सूत्र

नए-नए दोस्त बनाएँ

स्वस्थ संबंध वास्तु का सनातन नियम है, नए संपर्क बनाएँ। बाहर जाने और दूसरों से बातचीत करने से न कतराएँ। नए दोस्त बनाएँ या कम से कम अपनी प्रसन्नता का दायरा बड़ा करने के लिए कई नए संपर्क तो जरूर बनाएँ।

प्लॉट / घर का आकार

146

अनियमित या असंगत आकृति वाले घर वास्तु समस्याएँ करते हैं।

147

३,५ या ७ कोने वाला प्लॉट/घर आपको कभी शांति, समृद्धि और प्रसन्नता पूर्वक जीने नहीं देगा अत: ऐसे घरों को टाल देना चाहिए।

148

एक वर्गाकार घर मंगलककारी समृद्धि प्रदायक होता है तथा सफलता तथा चतुर्दिक विकास प्रदायक होता है।

149

एक आयताकार घर भी भाग्यशाली तथा चतुर्दिक उन्नति दायी होता है।

150

एक वृत्तकार प्लॉट पर वर्गाकार या आयताकार घर बनाना अमंगलकारी होता है। मगर प्ले ग्रटौर एक्टिविटी सेन्टर्स के लिए उपयुक्त रहता है।

151

षट्कोणीय प्लॉट उन्नतिकारक, प्रगतिदायक तथा समृद्धिकारक होता है। स्पोर्ट्स काम्पलैक्स (खेल-परिसर) के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

152

अण्डाकार प्लॉट / घर अमंगलकारी होता है और नुकसान कारक होता है मगर क्रीड़ा और खेल गतिविधियों के लिए अधिक उपयुक्त भी रहता है।

153

त्रिभुजाकार प्लॉट / घर से सरकारी परेशानियाँ, दण्ड की समस्या आती है तथा अग्निजनित नुकसान भी होते हैं।

154

समान्तर चतुर्भुजाकार प्लॉट / घर के कारण परिवार में असामंजस्य बना रहता है, वित्तीय नुकसान उठाने पड़ते हैं तथा प्रसन्नता नही रहती।

विपुलता और सौंदर्य की माता

यह प्रयास करके देखें !

व्यापार और करीयर में उन्नति के लिए आपकी जिस देवी पर श्रद्धा हो उसका एक फोटोग्राफ घर या शयन कक्ष के उत्तर-पूर्वी कोने में रखें और प्रतिदिन एक अगरबत्ती जलाएँ। अच्छा रहेगा यदि आप अपनी कुलदेव की फोटो लगाएँ।

155

सितारे की आकृति वाले प्लॉट / घरों में झगड़े कानूनीवाद और शांति का अभाव होता है।

156

त्रिशूलाकार प्लॉट / घर में रहने और काम करने वालों के बीच झगड़े तथा असामंजस्य होता है।

157

अष्ठभुजाकार या मृदंगाकार प्लॉट / घर में पति-पत्नी की मृत्यु की संभावना रहती है।

158

अर्ध्द-वृत्ताकार प्लोट/घर में गरीबी और कंजूरी से दिन गुजारने पडते हैं।

159

चक्राकार प्लोट/घर अमंगलकारी होते हैं तथा ये गरीबी तथा अस्थिरता दायक माने जाते हैं।

160

भद्रासन/पिरामिड यंत्र की आकृति वाले प्लोट/घर के निवासियों को चतुर्दिक प्रसन्नता प्राप्त होती है।

161

विषम चतुर्भुजाकार (जहाँ प्रवेश द्वार पिछवाड़े की तुलना में संकरा वाले प्लोट/घर में शांति और गोपनीयता बनी रहती है किंतु यह दुकान या व्यापारिक उद्देश्य वालों के लिए बिलकुल उपयुक्त नहीं होता।

जीवंत वास्तु सूत्र

सफाई ना दें

सिर्फ जिम्मेदार लोग परिणाम पाते है। आपकी जिंदगी में घटनेवाली घटनाओं के प्रति अपना कर्तव्य स्पष्ट रुपसे अपनाईए। जिस दिन आपने जीवन में अपनी जिम्मेवारी संभाली, उसी दिन आपका शिखर की ओर बढना प्ररंभ होगा। अगर आप सचमुच उसे करना चाहते है तो वही करों। याद रहें सभी सफाई के प्रति जागरूक रहें अन्यथा यह बीमारी आपके जीवन को नष्ट कर सकती है।

162

उलटा विषम चतुर्भुजाकार (जहाँ प्रवेश द्वार पिछवाड़े की तुलना में अधिक बड़ा हो) वाला प्लोट/घर बिलकुल उपयुक्त नही माने जाते क्योंकि इससे सामाजिक जीवन में इतनी अधिक संलिप्तता बढ़ जाती है कि इससे गोपनीयता नहीं बनी रहती किंतु यह व्यापारिक उद्देश्यों के लिए बहुत अच्छे होते हैं।

कोनों में कटाव और बढ़ाव

(अधिक विवरण - कोनों की भूमिका देखें पृ २० पर)

163

पूरे घर के क्षत्रफल के २% से अधिक का कटाव या बढ़ाव नकारात्मक प्रभाव फैलाते हैं चाहे ये उत्तर-पूर्व में ही बढ़ाव क्यों न हो अत: इसका सुधार किया जाना चाहिए।

164

वास्तुशास्त्रानुसार उत्तर-पूर्व बढ़ोतरी को हमेशा सकारात्मक माना जाता है मगर याद रखें यह केवल प्लोट या घरों में प्राकृतिक बढ़ोतरी पर ही लागू होती है और मानव निर्मित या जान बूझकर की गई बढ़ोतरी अपनी शक्ति घटा देती है।

रसोई

165

रसोई के लिए श्रेष्ठ स्थान दक्षिण-पूर्व का कोना रहता है। दूसरा विकल्प होता है घर का उत्तर-पश्चिमी कोना।

166

खाना बनाने की गेस या चूल्हा दक्षिण-पूर्व दिशा की तरफ रखा जाना चाहिए मगर ऐसे कोने में दक्षिणमें ना रखें किंतु पूर्व की तरफ ही होना चाहिए।

167

दक्षिणाभिमुखी होकर खाना बनाने से पकाने का काम काज में अरुचि हो सकती है और निम्नलिखित स्वास्थ्य समस्याएँ भी हो सकी हैं -
उच्च रक्तचाप, अर्थराईटिस, मधुमेह तथा जोड़ों का दर्द।

168

खाना बनाने का चुल्हा रसोई के बाहर से दिखाई नहीं देना चाहिए विशेषकर घर के मुख्य द्वार से कभी दृष्ट नहीं होना चाहिए। इससे धन तथा बचत नष्ट हो जाती है।

169

स्टूडियो टाइप के घरों (जिनमें अन्दर दिवारें नहीं होती!) में केंद्र (बीच) में खुलने वाली रसोई भी वास्तु दोष पैदा करती है।

170

रसोई में आइलैण्ड कुकिंग रेंज या ऑवन को रसोई के बीच में कदापि न रखा जाए क्योंकि इससे घर के सदस्यों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

यह प्रयास करके देखें !

बुरी ऊर्जाओं को हराकर नई ऊर्जाओं का स्वागत करना यानी स्वच्छता एक बड़ा उपाय है। एक अच्छी गुणवत्तावाली सप्तधातु सिगिंग बाउल खरीद लें और सप्ताह में एक बार इसकी अंतरीक्ष-ध्वनि से अपने कमरे को स्वच्छ होने दें। माह में एक बार अपने घर की शुद्धि करना उचित रहेगा।

171

रसोई के दरवाजा जरुर रखे तथा जब खाना नहीं पकाया जा रहा हो तब उसे बंद रखा जाए।

172

नल और सिंक उत्तर-पूर्व दिशा में रखे जाएँ और चूल्हे तथा कुकिंग रेंज वाले एक ही प्लेटफार्म पर न रखे जाएँ क्योंकि साथ-साथ रखे जाने से घर में विवाद/मतभेद/झगड़े पैदा हो जाते हैं।

173

रसोई में यदि रेफ्रीजिरेटर रखा गया हो तो इसे उत्तर-पूर्वी दिशा में न रखा जाए तथा दक्षिण-पश्चिम दिशामें कोने से थोडा दूर रखें।

174

रसोई की पूर्वी दिशा में केवल एक या दो खिड़कियाँ या छेद होने चाहिए। रसोई में अधिक बड़ी खिड़कियाँ पूर्वी दिशा में बनाई जाए जब कि छोटी हवादार बारियों को दक्षिण में रखा जाए। पूर्व में एक हवा बाहर फैंकने वाला एक्जॉस्ट फेन लगाना उत्तम रहता है।

175

हीटर, परम्परागत ऑवन, माइक्रोवेव ऑवन को रसोइ के दक्षिण-पूर्व या दक्षिण में रखा जाए तथा उत्तर-पूर्वी में तो कभी नहीं रखा जाए।

176

खाद्य-अनाज, बर्तन तथा ऑवरहेड केबीनेट को हमेशा दक्षिणी या पश्चिमी दीवारों पर ही व्यवस्थित करें तथा उत्तरी एवं पूर्वी दीवारों पर नहीं।

177

पानी के स्रोत तथा घड़े वाटर फिल्टर आदि को उत्तर-पूर्व में रखा जाए।

178

स्नान-घर या शोचालय के नीचे रसोई को कभी न रखा जाए यहाँ तक कि स्नान घर या टॉयलेट की दीवार और रसोई की दिवार कॉमन न बनाई जाए।

179

पूजा कक्ष रसोई या चूल्हे के ऊपर की तरफ न बनाया जाए क्योंकि इससे दुर्भाग्य पनपता है।

180

यदि रसोई में खाना खाने की मेज हो तो इसे उत्तर-पश्चिम या पश्चिम की तरफ रखें।

181

यदि रसोई उत्तर-पूर्व दिशा में हो तो इससे मानसिक तनाव बढ़ता है और भयंकर नुकसान उठाने पड़ते हैं। यदि रसोई दक्षिण-पश्चिम दिशा में है तो घर का सामंजस्य बिगड़ता है।

182

यदि रसोई उत्तर-पश्चिम दिशा में है तो परिवार का खर्च बढ़ने लगता है।

183

यदि रसोई दक्षिण-पश्चिम दिशा में है तो इससे पति-पत्नी के बीच तीव्र विवाद होने लगते हैं।

184

यदि रसोई पश्चिम दिशा में है इससे जीवन में कठिनाईयाँ आ जाती हैं।

185

यदि रसोई पूर्व दिशा में है तो विलासिता की वस्तुओं के बावजूद घर की महिला असंतुष्ट रहती है तथा मने में शांति नहीं रहती।

186

घर के उत्तर में रसोई होना करियर तथा धन-दौलत के लिए खतरनाक रहता है क्योंकि इसे कुबेर का स्थान माना जाता है अत: रसोई की ऐसी स्थिति होने पर अनावश्यक खर्चे आते रहते है।

187

रात्रि के समय कार्योपरांत रसोई को साफ-सुथरा करके सोएँ तथा सोने के पूर्व प्रयोग में आए बर्तनों को साफ करना चाहिए अन्यथा घर में बीमारी आती है।

188

खाना पकाने के पूर्व एक दीया जला लें तथा सर्वप्रथम पकाए अन्न का कुछ भाग अग्नि को अर्पित करें। इससे घर में शांति व समृद्धि आएगी।

189

रसोई का द्वार टॉयलेट के द्वार के सामने न हो इससे खाद्य सामग्री संदूषित हो जाती है जिससे बीमारियाँ आती है।

190

रसोई में दवाइयों को स्टोर करके न रखें । कहा जाता है कि इससे नकारात्मकता आती है।

यह प्रयास करके देखें !

प्रयोग में लाए हुए और साफ न किए हुए बर्तनों को विशेषकर रात्रि में घर के बाहर रख दें क्योंकि ये नकारात्मक सोच एवं भावना पैदा करते हैं। यदि संभव न हो तो किसी प्लास्टिक में बंद करके रख दें तथा उसके नजदीक एक कटोरी में खड़ा नमक रख दें। प्रतिदिन प्रात: नमक फैंक दिया करें।

डाइनींग रूम

191

डाइनींग रुम का निर्माण करने के लिए घर के पूर्वी पश्चिमी या दक्षिणी हिस्से का प्रयोग करें।

192

खाने की मेज इस प्रकार रखें कि घर का मुखिया या उसकी पत्नी या उसका ज्येष्ठ पुत्र कमरे में दक्षिण पश्चिम के दक्षिण में या दक्षिण-पश्चिम के दक्षिण में या दक्षिण-पश्चिम के पश्चिम वाली कुर्सी पर बैठ सके।

193

खाने के कमरे में कोई मेहराब न बने हो।

194

खाने की मेज आयताकार या वर्गाकार होनी श्रेयस्कर रहती है। अनियमित आकृति वाली अष्टकोणीय, अण्डे की आकृति वाली टेबल का प्रयोग न करें।

मास्टर बेडरुम (मुख्य शयन कक्ष)

195

जीवन में स्थिरता के लिए मुख्य शयनकक्ष की सर्वश्रेष्ठ दिशा दक्षिण-पश्चिम होती है।

196

जिस पति-पत्नी के जोड़े का भरा पूरा परिवार हो उसके लिए मुख्य शयनकक्ष केवल दक्षिण-पश्चिम में होना चाहिए यह नव विवाहित जोड़े के लिए नहीं है।

197

सभी मुख्य शयनकक्ष दक्षिण-पश्चिम में होना चाहिए और यदि एक घर में दो जोड़े रहते हों लेकिन जो एक जोड़ा घर को अधिक नियंत्रित करता है उसका शयनकक्ष अन्य जोड़ों के शयनकक्ष के ऊपर होना चाहिए।

198

एक मुख्य शयनकक्ष में केवल एक ही बेड (चारपाई) यदि आपको अच्छा लगे तो बेड बड़ा किंग-साइज या अधिक बड़ा हो सकता है। एक गद्दा तथा एक बेड-शीट होनी चाहिए अन्यथा उस जोड़े के बीच प्रेम तथा संतान होने को प्रभावित करता है।

199

सोने के समय ध्यान रखा जाए कि हर व्यक्ति (चाहे स्त्री होया पुरुष) का सिर दक्षिण की तरफ हो।

200

शयन कक्ष में देवी-देवताओं की मूर्ति या चित्र न रखे जाएँ।

जीवंत वास्तु सूत्र

सहमत होने के कारण खोजें

बचपन से ही हम गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा का कड़ा अनुभव झेलते आ रहे हैं अत: हममें तर्क-वितर्क करने की आदत-सी हो गई है। हमें हर गलत के लिए समर्पित नहीं होना है । एक बार सहमति दिजिए, जिस बात से दुनिया ऊपर से नीचे नहीं होती यानी उलट नहीं होती ऐसी बातों पर सहमत होना हितकर है ।

201

वर्गाकार और आयताकार आकृति वाले बेड एवं बेडरुम शांति और समृद्धि के लिए उपयुक्त होते है।

202

रात को मुख्य बेडरुम में एक छोटा हल्की रोशनी का बल्ब हमेशा जलता रहे। कभी भी लाल रंग के प्रकाश वाला नाइट बल्ब प्रयोग न करे बल्कि हरे या नीला प्रकाश ठीक रहेगा।

203

मुख्य बेडरुम में कोई जल का स्रोत न रखें जैसे फौवारा और मछली घर क्योंकि जल अस्थिर तत्व कहलाता है अत: ऐसे जल स्रोत रखने से जीवन में अस्थिरता पैदा हो जाती है।

204

मुख्य बेडरुम में शीशे या परावर्तक चीजें जैसे टीवी स्क्रीन न रखे जाएँ। विशेषकर वे परावर्तक जिससे आपकी छाया परावर्तित होती है उन्हें न रखें क्योंकि इससे शरीर में दर्द तथा बीमारी आती है। यदी आप ऐसी परावर्तक चीजें रखते हैं तो ध्यान रखें कि सोने से पहले उन चीजों को ढक दिया जाए।

205

मुख्य शयन कक्ष को खुला-खुला रखें। अधिक अव्यवस्थित साज सजावट से मुक्त रखें और अन्य न्यूनतम आवश्यक सजावट की वस्तु ही रखी जाए।

206

मुख्य शयन कक्षमें खिड़कियाँ इस प्रकार से हो कि हवा दक्षिण से पश्चिम की तरफ बहती हो।

207

बिस्तर कभीभी बीम के नीचे नही होना चाहिए। इससे गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती है।

जीवंत वास्तु सूत्र

पुरानी यादों को भुला दीजिए

यदि आपके जीवन में कुछ भी नया या उत्साहजनक नहीं हो रहा है, इसका मतलब है कि आप अभी तक अपने अतीत से ही चिपके हुए हैं। आपके दिल और दिमाग में रास्ता जाम हो गया है। अत: पुरानी यादों को जला दीजिए या भुला दीजिए। इससे केंद्रमें यानी आपके मन, मस्तिष्क में खुली जगह ही वास्तु में सफलता और उन्नति का मुख्य नियम है।

208

आपका बिस्तर किसी द्वार के सामने नहीं होना चाहिए, चाहे वो दरवाजा आपके कमरे का हो या टॉयलेट का हो।

209

दक्षिण-पूर्व में मुख्य शयन कक्ष होने से पति-पत्नी के बीच गर्मा गर्म बहस या विवाद होने की संभावना है।

210

उत्तर-पूर्व में शयन कक्ष होने पर मानसिक कमजोरी आती है।

211

पूर्व में मुख्य शयन कक्ष हो तो विवाद होता है, खराब स्वास्थ्य रहता है तथा मूड बनता-बिगड़ता रहता है।

212

उत्तर-पश्चिम में मुख्य शयन कक्ष होने पर अनावश्यक यात्राएँ एवं झगड़े होते रहते हैं।

213

मुख्य शयन कक्ष में हिंसक, कामुक, डरावने तथा जंगली जानवरों संबंधी चित्र या मूर्तियाँ न रखी जाए।

संतान/बच्चों का कक्ष

214

बच्चों के कक्ष निर्माण के लिए पश्चिम दिशा उचित है। पश्चिम के अलावा उत्तर-पश्चिम, उत्तर-पूर्व और दक्षिण पूर्व दिशाओं में भी बच्चों के कक्ष बनाए जा सकते हैं। दक्षिण-पश्चिमी दिशा को बिल्कुल टाल दिया जाए।

215

बच्चों के कक्ष में उनका बिस्तर दक्षिण पश्चिम कोने में लगाएँ। बिस्तर इस प्रकार रखें कि सोते समय बच्चों का सिर दक्षिण की तरफ ही रहें।

216

बेड़ के सामने शीशा न रखा जाए।

217

बच्चों के कक्ष में दीवार से सटाकर फर्नीचर न रखा जाए क्योंकि इससे सकारत्मक ऊर्जा प्रवाह बाधित होता है।

218

बिस्तर के बिल्कुल सामने टेलीविजन या कंप्यूटर न रखें। टेलीविजन सेट या कंप्यूटर मोनीटर जब बंद होते तब शीशे की तरह बेड की छवि प्रदर्शित करते हैं और ये बुरे लक्षण है।

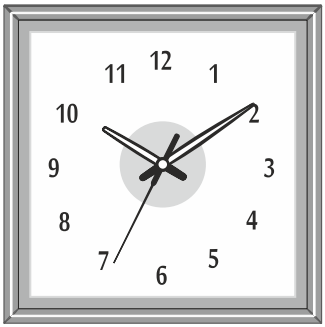

यह प्रयास करके देखें !

वस्तुओं की सुरक्षा व बढ़ोतरी के लिए कार्यालय या घर या कमरों में उत्तर की दीवार के केंद्र में दीवार घड़ी लगा दें। समृद्धि के लिए पूर्वी दीवार के केंद्र में लगाएँ। सभी नकारात्मकताओं से बचाव, पर्यावरणीय ऊर्जाओं के साथ संतुलन एवं समरसता बनाने के लिए दक्षिणी दीवार के केंद्र में दीवार घड़ी लगा दें। ध्यान दें: खराब व न चलने वाली घड़ी तुरंत हटा दें।

219

बच्चों या संतान कक्ष में धारदार नुकीली चीज़ें और धारदार कोने नहीं होने चाहिए।

220

बच्चों के कक्ष का बीच का भाग हमेशा खाली रखें।

221

बच्चों के कक्ष में खिड़कियाँ उत्तर तथा पूर्व दिशा में रखें।

222

रात्रि में घूमने वाली बुरी आत्माओं और बुरी नज़रों से अपने बच्चों को बचाए रखने के लिए रात को सोते समय बच्चों के तकिए के नीचे समुद्री नमक की छोटी पोटली रख देनी चाहिए।

223

पढ़ाई में अच्छी एकाग्रता के लिए बच्चों का अध्ययन कक्ष या पढ़ाई स्थल बेड से दूर होना चाहिए।

224

टूटे-फूटे खिलौने, सूखे एवं कटे-फटे फूल तथा फटे-पूराने कपड़ों को बच्चों के कक्ष में न रखें क्योंकि इससे नकारात्मकता एवं बीमारी आती है।

225

वास्तु शास्त्र में शायिका बेड या द्वि-स्तरीय बेड की अनुमति नहीं है क्योंकि इसके प्रयोग से उपरवाले का भार नीचेवाले के सिर पर पडता है तथा इस कारण तनाव एवं अड़चन पैदा होती है।

226

बेड के साथ लगी स्टडी टेबल वाली आधुनिक संकल्पना की तरह परिवर्तित बेड में पढ़ने की अनुमति वास्तु नियमानुसार नहीं हैं क्योंकि इससे अध्ययन में रुचि घटती है तथा पढ़ाई बोझ लगने लगती है।

जीवंत वास्तु सूत्र

साहसिक निर्णय

जीवन में सफलता पाने के लिए कभी न कभी साहसिक निर्णय लेने पड़ते हैं। हमारे अपने निर्णय को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध रहें लेकिन इसकी प्राप्ति के लिए अपने दृष्टिकोण में लचीलापन रखें।

अध्ययन कक्ष

227

अध्ययन कक्ष पूर्व में स्थित होना चाहिए तथा आपको पूर्व या उत्तर की तरफ मुख करके पढ़ना चाहिए।

228

कमरे के दक्षिण या पश्चिम में स्टडी टेबल को रखा जाना चाहिए।

229

पुस्तकालय-घर के दक्षिण-पश्चिम की तरफ स्थित होना चाहिए तथा पुस्तकों की अलमारी को कमरे के दक्षिण-पश्चिम में रखा जाए।

230

बच्चों का अध्ययन क्षेत्र साफ-सुथरा तथा सुव्यवस्थित होना चाहिए।

231

संतान-कक्ष में हर दम पीली एल ई डी लाइट जलती रखें।

232

स्टडी टेबल का आकार या तो वर्गाकार या आयताकार होना चाहिए।

233

अध्ययन कक्ष में देव गणेश और देवी सरस्वती की प्रतिमा लगाई जानी चाहिए।

234

कमरे के पूर्व तरफ की खिड़की बड़ी तथा पश्चिम तरफ की खिड़की छोटी होनी चाहिए।

235

सीखने की शक्ति को बेहतर बनाने के लिए अध्ययन कक्ष में बिना किसी रंग वाली प्रकाश व्यवस्था की जाए।

अभिभावक/दादा-दादी कक्ष

236

सभी बेड रुम दक्षिण-पश्चिम दिशा में बनाए जाने श्रेष्ठ होते हैं, मगर संभव न हो तो अधिक आयु वर्ग वालों के लिए दक्षिण में या पश्चिम में बेड रुम बनाया जाना द्वितीय विकल्प होगा।

इच्छापूर्ती

यह प्रयास करके देखें !

देखिए, यह कामना पूर्ति का कितना सरल और प्रभावी तरीका है! एक पेपर लेन्टर्न (कागज की लालटेन) पर लाल स्याही से अपनी कामना लिख दें। इस लालटेन के नीचे एक छोटी मोमबत्ती होती है जिससे उष्मा (गर्मी) पैदा होती है। लैंप को जलाएँ। एक बार जब आपकी लालटेन गर्म हवा से पूर्णत: भर जाएगी तो इसे दैवीय सहायता पाने के लिए आकाश की तरफ श्रद्धा और विश्वास के साथ छोड़ दें। मन मुताबिक परिणाम पाने के लिए इसे धार्मिक रुप में श्रद्धापूर्वक २१ दिन तक करें। एक बार में एक ही इच्छा लिखें, कागज की लालटेन सर्वश्रेष्ठ रहती हैं मगर दूसरा श्रेष्ठ विकल्प होता है - गैस से भरे हुए बैलून का प्रयोग करना।

237

एकल अभिभावक होने पर या दादा/दादी के लिए उत्तर पूर्व में भी शयन कक्ष उपयुक्त रहेगा।

पूजा (प्रार्थना) कक्ष

238

पूजा कक्ष पूर्व या उत्तर पूर्व की तरफ मुख वाला होना चाहिए।

239

घर में पूजा के स्थान में खुला वातावरण होना जरुरी रहता है।

240

ध्यान रखें कि वहाँ पर्याप्त हवा व प्रकाश हो।

241

टॉयलेट पूजा कक्ष के नजदीक नहीं होने चाहिए तथा टॉयलेट एवं पूजा कक्ष की दीवार कॉमन नहीं होनी चाहिए।

242

साफ-सफाई रखें तथा हमेशा अगरबत्ती जलाएँ।

243

''अखण्ड'' (२४ घंटे जलते रहने वाला) दीपक को जलाए रखना चाहिए इससे आपके जीवन में सभी बाधाओं को दूर करने की अपरिमित ऊर्जा मिलती रहेगी।

जीवंत वास्तु सूत्र

प्यार

प्यार एक जादूई छड़ी है जो संपन्नता/प्रचुरता का सृजन करती है। सच्चा, संपूर्ण और बिना शर्त का प्यार। प्यार आप और ईश्वर के बीच तथा आपके अंतर्मन/केंद्र में पड़े खजाने तथा आपके बीच सेतु के समान है।

244

यदि पूजा कक्ष में एक दीपक प्रकाशित हो तो वह ईश्वर के समक्ष होना चाहिए।

245

प्रार्थना कक्ष के दक्षिण-पूर्वी कोने में लैंप-स्टेंड रखा जा सकता है।

246

प्रार्थना कक्ष के द्वार अपने आप बंद या खुलने वाले नहीं होने चाहिए।

247

दो मूर्तियाँ एक-दूसरे के आमने-सामने मुँह करके न रखी जाए। टूटी-फूटी प्रतिमा और फटी हुई तस्वीर पूजा कक्ष में न रखे जाएँ।

248

पूजा कक्ष के लिए अलग या स्पष्ट सीमांकन किया जाना चाहिए और इसे किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग में न लाया जाए।

249

पूजा कक्ष सीढ़ियों के नीचे न रखा जाए।

भंडार - कक्ष

250

घर, कार्यालय या फैक्ट्री के दक्षिण में भंडार कक्ष बनाना जाना सर्वोत्तम माना जाता है।

251

भंडार को रिसाव और सीलन से दूर होना चाहिए क्योंकि इससे बिमारियाँ तथा वित्तीय नुकसान होने लगते है।

252

एक बड़ा भंडार कक्ष यदि मुख्य शयन कक्ष से अधिक बड़ा हो तो दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम में मुख्य भवन से दूर हो।

253

प्रेषित किए जाने वाले सामान का भंडार कक्षर उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित हो सकता है।

254

भंडार कक्ष में कभी सोना नहीं चाहिए क्योंकि इससे गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती है।

255

भंडार कक्ष में बड़े-बड़े खाली कंटेनर (डिब्बा/पात्र) नही रखने चाहिए।

यह प्रयास करके देखें !

बच्चों की एकाग्रता, समझ, स्मरण शक्ति तथा याद करने की शक्ति बढ़ाने के लिए एक पिरामिड केप का प्रयोग करें। (पिरामिड संबंधी जानकारी के लिए मेरी पुस्तक पिरामिड यंत्र फोर वास्तु पढ़े)

परिवार बैठक कक्ष

256

बैठक कक्ष के लिए सर्वश्रेष्ठ दिशा रहती है- उत्तर, उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम तथा पूर्व दिशा।

257

बैठक कक्ष में परिवार के मुखिया को पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर बैठना चाहिए ताकि उसके आदेशों का सम्मान किया जाता है।

258

बैठक कक्ष में वर्गाकार या आयताकार फर्नीचर रखे जाएँ और वृत्ताकार, अण्डाकार या अन्य आकार के फर्नीचर को न रखा जाए।

259

बैठक कक्ष के उत्तर-पूर्वी कोने को स्वच्छ तथा खाली रखें।

260

यहाँ कृत्रिम फूल, सूखे हुए फूल, (ये दुर्भाग्य लाते हैं।) केक्टस/केक्टी या बॉन्साई पौधे (ये वित्त/धन संपति और करियर पर नकारात्मक प्रभाव डालते है) अमंगलकारी रहते हैं।

261

बैठक कक्ष के बीच में दीपवक्ष/झाड़ कभी न लटकाएँ क्योंकि इससे तनाव तथा गलतफहमियाँ पनमती है ।

262

बैठक कक्ष में विशेषकर उत्तर-पूर्व, उत्तर या पूर्व दिशा में मछलीघर या छोटा फव्वारा रखना श्रेयस्कर रहता है। पूरे घर में बैठक कक्ष मछलीघर के लिए अच्छा स्थान होता है।

263

बैठक कक्ष में धरन/शहतीर (बीम) दिखाई नहीं देना चाहिए अन्यथा घर के सदस्यों या मेहमानों के बीच अनबन, मनमुटाव और मतभेद पैदा हो जाता है।

264

पक्षी, जानवर, महिलाएँ, रोते बच्चे, युद्ध के दृश्य आदि के चित्रों को इस कक्ष में प्रदर्शित न किया जाए।

शौचालय और स्नानघर

265

स्नानघर पूर्व में बनाया जाना श्रेष्ठ रहता है। विकल्पत: उत्तर-पश्चिम में भी बनाया जा सकता है किंतु बाथरुम कभी भी उत्तर-पूर्व में नहीं रखा जाए।

266

टॉयलेट केवल पश्चिम, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व दिशा में ही बनाए जाएँ मगर उत्तर-पूर्वी कोने में न बनाया जाए

267

टॉयलेट कभी चार कोनों में से किसी कोने में न बनाया जाए और इसकी लाइनें कोनों से जुड़ी न हो क्योंकि इससे बीमारियाँ, केंसर और तनाव पैदा होता है।

268

घर के बीचोंबीच टॉयलेट का होना वास्तु 'महादोष' कहलाता है। इसकी अनुमति बिल्कुल नहीं है क्योंकि इससे घर में निरंतर बीमारियाँ होती रहती है तथा मृत्यु तुल्य एवं मृत्यु पर्यंत बीमारियाँ चलती रहती हैं।

269

वॉश बेसिन आदि को बाथरुम की उत्तरी, पूर्वी या उत्तर-पूर्वी दिवार से चिपकाना चाहिए।

270

यहाँ उचित प्रकाश व्यवस्था की जाए तथा हवादार बनाएँ यानी हवा के दोनों तरफ से आने-जाने की व्यवस्था हो। सभी टॉयलेट्स में एक्जॉस्ट फैन लगाया जाए।

271

गीजर को दक्षिण-पूर्वी कोने में स्थापित करें।

272

नालियाँ उत्तर या पूर्व दिशा में बनाई जानी चाहिए।

273

दल और शॉवर उत्तरी ओर फिक्स किए जाएँ। बाथटब को पश्चिम, पूर्व या उत्तर पूर्व में इस प्रकार लगाएँ कि सिर दक्षिण की ओर रहे।

274

उत्तर-पश्चिम सामान्यतया टॉयलेट बनाए जाने के लिए उत्तम माना जाता है बाथ रुम में अटैच किया (संयुक्त) टॉयलेट भी इसी दिशा में होना चाहिए। यहाँ एक निकास पंखा लगाये।

275

यदि बाथरुम में संयुक्त (अटैच्ड) टॉयलेट हो तो हमेशा एक स्वत: बंद होने वाला द्वार लगा दें और यह सुनिश्चि करें कि बाथरुम का द्वार अधिक लंबे समय तक अनावश्यक रुप से खुला न रह पाए।

जीवंत वास्तु सूत्र

विश्वास करना सीखें

संपूर्ण ब्रह्मांड का सृजन प्रगाढ़ अन्तर संबंधों पर आधारित है। सभी प्रकार के कल्याण रुपी द्वार की चाबी है- संबंध। सर्वोत्तम मेल-मिलाप शक्ति, यानी - 'विश्वास' को मजबूत करना सीख लीजिए। जीवन का अंतिम सूत्र है - स्वयं पर विश्वास, दूसरों पर भरोसा तथा दिव्य माता एवं परम पिता पर आस्था और विश्वास।

276

टॉयलेट कभी भी उत्तर पूर्व कोने में न बनाए जाएँ यह एक खतरनाक वास्तु दोष होता है। इसके कारण जोखिमी स्वास्थ्य समस्याएँ, दुर्घटनाएँ, संतति में समस्याएँ होती है तथा अनावश्यक तनाव बना रहता है।

277

दक्षिण-पश्चिम में टॉयलेट होना भी अच्छा नहीं रहता क्योंकि इससे वित्तीय मामलों में हानियाँ और अनावश्यक खर्चे होते है।

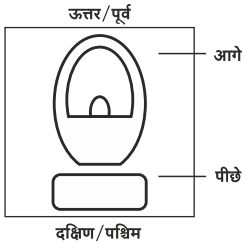

278

टॉयलेट को उत्तराभिमुखी या पूर्वाभिमुखी बनाएँ और कभी भी टॉयलेट का मुख द्वार दक्षिण या पश्चिम की तरफ न हो।

279

टॉयलेट कभी भी बाथरुम के द्वार के सामने न आए।

280

टॉयलेट सीढ़ियों के नीचे न बनाएँ। यह भवन के बीचों बीच के क्षेत्र में बनाया जाना भी बिल्कुल अच्छा नहीं हैं।

281

पूजा कक्ष या रसोई के पास या ऊपर टॉयलेट नहीं होने चाहिए। केवल एक टॉयलेट के ऊपर ही दूसरा टॉयलेट बनाया जा सकता है।

अतिथि कक्ष

282

अतिथि कक्ष के लिए उत्तर-पश्चिम श्रेष्ठ स्थान होता है। क्योंकि यह अतिथियों के लिए प्रसन्नता शांतिपूर्ण एवं अल्प-निवास सुनिश्चित करता है।

283

कभी भी मेहमानों को दक्षिण-पश्चिमी शयन कक्ष में न रहने दें अन्यथा वे आप और आपकी जीवन को नियंत्रित करना शुरु कर देंगे।

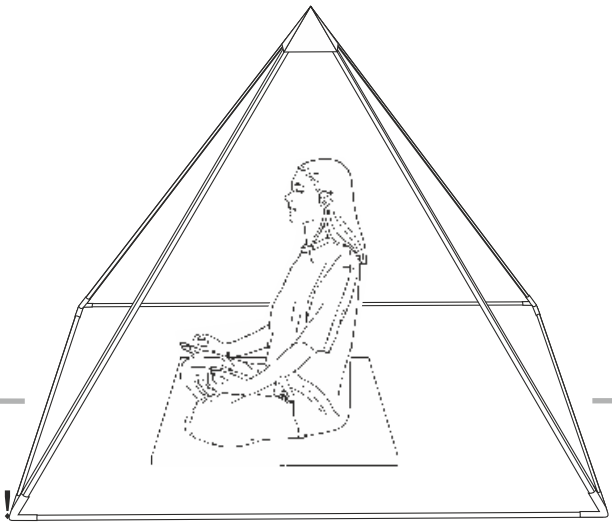

यह प्रयास करके देखें !

एक पिरामिड के नीचे रोज़ ध्यान करने से आपको निम्नलिखित फायदे मिलते है- एकाग्रता, कम चिंता, तनाव से मुक्ति, अधिक सर्जन शक्ति एवं लगन। तनाव घटता है तथा आप में बेहतर भावनात्मक स्थिरता आती है।

पालतु पशु/पक्षी कक्ष

284

वास्तु में कभी इस बात की अनुमति नहीं होती कि जनावर एवं इंसान एक ही क्वाटर में रहे और जंगली जानवरों को तो घरों में पालतू बनाकर रखने की बिल्कुल अनुमति नहीं होती।

285

मुख्य घर के बाहर कुत्ताघर बनाकर पालतू जीव-जंतुओं को रखा जाए और इन्हें बनाने के लिए दक्षिण दक्षिण-पूर्व और उत्तर-पश्चिम दिशाएँ श्रेष्ठ है।

286

जो पालतू जानवर आपकी ऊँचाई से आधी ऊँचाई वाले हों केवल उन्हीं को घर में रखे जाने की अनुमती है। अन्यथा उन्हें घर की उत्तर-पश्चिम दिशा में शेड बना कर रखा जाए। घर में छोटे बच्चे होने पर केवल बहुत छोटे आकार वाले पालतू जानवर रखें या फिर बच्चों के बड़े हो जाने पर रखें अन्यथा ये बच्चों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डाल सकते हैं।

287

पक्षी, खरगोश, हेमस्टर्स और अन्य पिंजरे में रखे जाने वाले जंतुओं को घर के अंदर रखने की अनुमति नहीं है। हाँ, उन्हें बाहर की तरफ पिंजरे में रखा जा सकता है।

बालकॉनी

288

बालकॉनी और बरामदा बनाने के लिए घर की उत्तर और पूर्व दिशा सर्वश्रेष्ठ है।

जीवंत वास्तु सूत्र

डायरी (दैनन्दिनी)रखें

एक डायरी रखने से आपको अपने विचारों, भावों की समीक्षा तथा परीक्षण करने का मौका मिलेगा जिससे आप खुद अपने आपको बेहतर समझने लगेंगे। उचित सोच और भावनाओं से ही तदनुकूल आपका भाग्य बनता है। इससे असहमतियों का समाधान निकल सकेगा तथा समास्याओं का प्रभावी ढंग से समाधान मिलेगा परिणामत: आपके तनाव घटेंगे।

289

दक्षिण, पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम मैं बालकॉनी न बनाई जाए।

290

यदि आप बालकॉनी में झूला लगाना हो तो इसके लिए पूर्व-पश्चिम दिशा श्रेष्ठ है अर्थात झूले पर बैठने वाले का मुख पश्मिच या पूर्व की तरफ हो।

291

बरामदे के कोने गोलाकार नहीं होने चाहिए।

292

बालकॉनी में छोटे गमलों में केवल छोटे पौधे लगाने की ही अनुमति है।

सीढ़ियाँ

293

सीढ़ियों के निर्माण के लिए श्रेष्ठ दिशाएँ होती हैं दक्षिण और पश्चिम ।

294

ऊपर जानेवाली सभी सीढ़ियाँ क्लोकवाइज दिशा में होनी चाहिए। यानी सीढ़ियाँ इस प्रकार हों ताकि उन पर चढ़ने वाले उत्तर से दक्षिण की तरफ या पूर्व से पश्चिम दिशा की तरफ चढ़ेंगे ।

295

सीढ़ियाँ का ब्लॉक उत्तर-पूर्व में बनाएँ जिनका मुख पूर्व की ओर है बाहरी सीढ़ियाँ दक्षिण-पश्चिम में बनाएँ जिनका मुख पश्चिम की ओर है।

296

बाहरी सीढ़ियाँ उत्तर-पश्चिम में बनाएँ जिनका मुख उत्तर की ओर है । बाहरी सीढ़ियाँ, दक्षिण -पश्चिम में बनाए जिनका मुख दक्षिण ओर है।

297

सीढ़ियाँ हमेशा उत्तर से शुरु होकर दक्षिण की तरफ या पूर्व से शुरु होकर पश्चिम में जाए। जगह की कमी होने पर उनका मुड़ाव अन्य दिशाओं में भी किया जा सकता है।

298

सीढ़ियों की संख्या हमेशा विषम हों तथा शून्य पर समाप्त न हो।

299

सर्पिल सीढ़ियों की सलाह नहीं दी जा सकती क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इससे स्वास्थ्य खराब रहता है। गोलाकार सीढ़ियाँ भी न बनाई जाए इससे विपत्ति आती है।

300

तहखाने के दक्षिण-पश्चिमी कोने में सीढ़ियों वाला कमरा अमंगलकारी होता है।

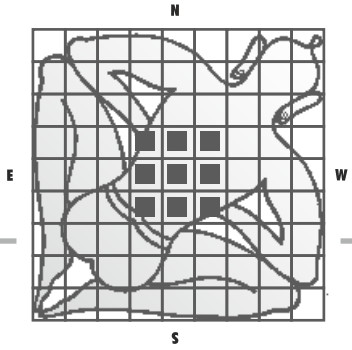

यह प्रयास करके देखें !

घर का केन्द्र पवित्र स्थान होता है, और हमारी आसपास समृद्धिका सर्जक है। स्वप्नों की पूर्ती के लिए पवित्र पिरामिड यंत्रकी स्थापना किजिए।

301

सीढ़ियों के शुरुआत तथा अंत में द्वार लगाए जाने की सलाह दी जाती है।

302

सीढ़ियाँ इस प्रकार बनाएँ कि वे उत्तरी या पूर्वी दीवार को स्पर्श नहीं करे।

303

सीढ़ियाँ आगंतुकों को दिखाई नहीं देनी चाहिए।

304

टूटी हुई सीढ़ियाँ की तुरंत मरम्मत करवा लेनी चाहिए।

305

स्नानघर रसोई या पूजा कक्ष सीढ़ियों के नीचे न बनाए। सीढ़ियों के नीचे का स्थान केवल भंडार-क्षेत्र के रुप में इस्तेमाल किया जाए।

कॉलम (स्तंभ/खंभा) और बीम (शहतीर/धरन)

306

हमें बीम के नीचे नहीं सोना चाहिए क्योंकि यह स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक होता है।

307

बीम के नीचे नहीं बैठना चाहिए क्योंकि बीम से निकलने वाली नकारात्मक ऊर्जा आपकी कार्यक्षमता को दुष्प्रभावित करती है जिस कारण आपका कार्य निष्पादन असंतोषजनक रहता है।

308

घर की सजावट करते समय बीम को फाल्स सीलिंग लगाकर ढ़का जा सकता है और समतल सीलिंग बनाई जा सकती है।

309

घर में बीम और कॉलम की गिनती सम संख्या में होनी चाहिए। ये विषम संख्या में न लगाए जाएँ।

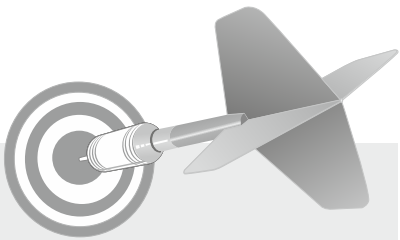

जीवंत वास्तु सूत्र

अपने लक्ष्य पर ध्यान देना सीखें

जीवन में सदैव अपने लक्ष्य प्राप्त करने वाला इरादा हो। ध्यान भंग करने के बजाय लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपने आप को प्रशिक्षित करें। आपके प्रमुख प्रबंधक यानी आपके मस्तिष्क की मुख्य विशेषता है कि वह आपको विकल्प सुझाता रहता है, अपने मस्तिष्क को ना कहना सीखें और केवल लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करें अन्यथा आप अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जरूरी अपनी कीमती ऊर्जा को व्यर्थ ही नष्ट कर देंगे।

310

धन, तिजोरी या मूल्यवान चीजें कभी भी बीम के नीचे न रखें क्योंकि नीचे रखने से इनमें कमी हो जाती है।

311

लंबे समय तक कोई गतिविधि बीम के नीचे न चलाई जाए यानी कोई कार्य लंबे समय तक बीम के नीचे करने की सलाह नहीं दी जा सकती।

टैंक

312

ऑवर हैड टैंक पश्चिमी या दक्षिण-पश्चिमी दिशा में बनाए जाए।

313

दक्षिण-पूर्वी कोने में ऑवर हैड टैंक बनवाना शुभ शगुन नहीं है और इसके कारण धन हानि तथा दुर्घटनाएँ हो सकती है।

314

अंडर-ग्राउंड टैंक उत्तरी, पूर्वी और उत्तर-पूर्वी दिशा में होनी चाहिए।

315

अंडर-ग्राउंड टैंक की दीवार इस प्रकार बनाएँ कि वह आपके मुख्य घर की दीवार से स्पर्श नहीं करे।

कूएँ और बोर-वेल

316

उत्तर में कूआँ धन-समृद्धि दायक होता है, उत्तर-पूर्वी कूआँ संपत्ति, स्वास्थ्य तथा समृद्धिदायक होता है।

317

पूर्व में स्थित कूआँ, संतान के लिए नुकसानदेह होता है और दक्षिण-पूर्वी कूआँ आग जनित तकलीफ देने वाला होता है।

318

दक्षिण में स्थित कूआँ शत्रुता बढ़ाता है, शत्रु-डर बढ़ाता है और दक्षिण-पश्चिमीं कूआँ महिलाओं में झगड़े बढ़ाता हैं।

लाभकारी ऊर्जा का स्रोत

यह प्रयास करके देखें !

परिवार की समृद्धि तथा उन्नति के लिए मंगलकारी 'कलश' तैयार करें और इसे पूजा घर में स्थापित करें। ताँबे का कलश ले, गंगा जल से भरें, अब कलश में आम के पत्ते रखकर सीट जैसा बना लें उस पर एक नारियल रखें व एक चांदी का सिक्का रख दें। एक कप चावल की सीट बना लें।

319

पश्चिम में कूआँ महिलाओं पर बुरा असर डालता है तथा उत्तर-पश्चिमी कूआँ गरीबी लाता है।

सैप्टिक टैंक तथा सोक पिट्स

320

सैप्टिक टैंक के लिए श्रेष्ठ स्थान उत्तर में (मध्य से उत्तर पश्चिम की तरफ) या पूर्व में रहता है।

321

सैप्टिक टैंक की लंबाई उत्तर-दक्षिण अक्ष की बजाय पूर्व-पश्चिम अक्ष में अधिक होनी चाहिए।

322

सैप्टिक टैंक की ऊँचाई उसके ग्राउंड लेवल के बराबर होनी चाहिए।

323

सैप्टिक टैंक का मलोत्सर्जन भाग पश्चिम में हो तथा पानी का बहाव पूर्व या उत्तर की तरफ से हो।

324

सैप्टिक टैंक को इस प्रकार रखा जाए कि उसका न तो मुख्य भवन से स्पर्श हो और न ही चार दीवारी से स्पर्श हो और उनके बीच कम से कम एक फुट की दूरी रखी जाए।

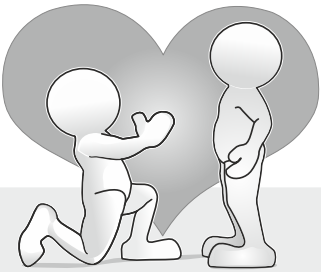

जीवंत वास्तु सूत्र

क्षमा करना सीखें

क्षमाशीलता दबी हुई प्रसन्नता को खोल देने वाला वाल्व(कपाट) है । कोई क्षमाप्रार्थी या क्षमापात्र है इसलिए आप उसे क्षमा नहीं कर रहे हैं बल्कि आप स्वयं अपने प्रसन्नता एवं शांतिपूर्ण जीवन के लिए किसी को क्षमा कर रहे हैं। अनुत्पादक, व्यर्थ की सोच व भावनाओं को अपने अंदर दबाए रखने या पकड़े रखने में आपकी बहुत सारी ऊर्जा व्यर्थ खर्च होती है।

325

सैप्टिक टैंक कभी भी उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण में या कोने में न हो।

326

इसमें से पानी का निकास कभी भी दक्षिण दिशा में नहीं होना चाहिए।

327

यदि घर के उत्तर-पूर्वी कोने में सेप्टिक टैंक बनाया जाता है तो यह स्वास्थ्य तकलीफें पैदा करेगा, जो विशेषकर बच्चे और बूढ़े लोगों को हो सकती है।

328

यदि सेप्टिक टैंक घर के दक्षिण-पश्चिमी कोने में हो तो इससे भयंकर वित्तीय नुकसान तथा घर के मालिक को अप्रत्याशित खर्चे उठाने पड़ते हैं।

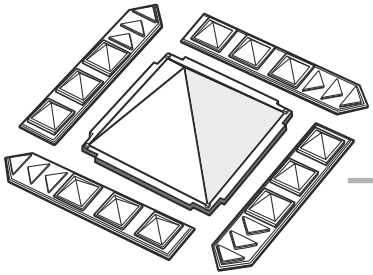

यह प्रयास करके देखें !

जिओपैथिक स्ट्रैस से सावधान रहें इसके कारण जीर्ण शरीर-दर्द, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन और अधूरी नींद आदि समस्याएँ हो जाती है। इसके कारण वंध्यत्व, गर्भपात, सीखने में तकलीफ, जन्म जात दोष, बिहेव ओरल डिसआर्डर और स्नायु अक्षमता आदि समस्याएँ आती हैं। इसके लिए विशेषरुप से डिजाइन्ड 'जियोमिड' का प्रयोग करें या एक ताँबें की कटोरी ले, इसे चावल से भरें और सोने के समय अपने सिर के पास रखें। प्रति पूर्णिमा को हर माह चावल बदलते रहें।

नालियाँ

329

यदि सेप्टिक टैंक घर के दक्षिण-पश्चिमी कोने में हो तो इससे भयंकर वित्तीय नुकसान तथा घर के मालिक को अप्रत्याशित खर्चे उठाने पड़ते हैं।

330

रसोई से निकलने वाला नाला उत्तर या पूर्व की तरफ होना चाहिए।

331

सुनिश्चित करें कि टॉयलेट एवं बाथरुम में नालियों की पाइप का रास्ता पश्चिम में या उत्तर-पश्चिम में हो।

यह प्रयास करके देखें !

जो दीवार मुख्य द्वार से स्पष्ट दिखाई दे उस दीवार पर 'ॐ' का उच्चारण करते हुए तथा 'ॐ' का प्रतीक स्थापित करने पर आपको बीमारियों तथा दुर्भाग्य से रक्षण करता है। यह आपको अपने लक्ष्य व मकसद पूरा करने के लिए अनंत सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करत है।

332

घर के दक्षिणी भाग में नालियों के पाइप न लगाए जाएँ और अगर ऐसा किया जाना जरुरी हो तो यह सुनिश्चित जरुर करें कि उनका रास्ता पूर्व या उत्तर में बनाया जाए।

333

मुख्य सीवेज उत्तर, पूर्व या पश्चिम में रखा जा सकता है मगर दक्षिण दिशा में नहीं होना चाहिए।

पेड़ और पौधे

334

हमेंशा अपने घर में तुलसी का पौधा जरुर रखें और इसे देखें कि यह कभी सूख न जाए, यह सौभाग्य सुनिश्चित करता है।

335

फलदार पेड़ बगीचे के पूर्व में लगाए जाएँ।

336

अपने घर के दक्षिण-पश्चिम में बड़े या लंबे पेड़ लगाएँ यह माना जाता है कि इससे स्थिरता एवं उन्नति होती है।

337

लताएँ या पेड़ आदि के सहारे चढ़ने वाली बेलों को मुख्य या चार दीवारी के सामने न लगाया जाए।

338

यदि आपके घर के बिल्कुल सामने कोई धार्मिक स्थल हो तो मुख्य द्वार को छोड़ते हुए बाकी जगह सामने की तरफ पेड़ों को कतारनुमा लगाए ताकि पेड़ों की एक कतार बन जाए।

339

घर के सामने केवल दो शाखाओं वाला पेड़ अच्छा नही होता।

340

घर में उगाए गए पेड़ों की गिनती सम संख्या में होनी चाहिए,
जैसे - २, ४, ६ आदि।

जीवंत वास्तु सूत्र

कृतज्ञता प्रदर्शित करें

आपने पिछली बार ''धन्यवाद'' कब दिया था? क्या वो दिल से दिया था? हर कोई जानता है कृतज्ञता ज्ञापित करना सफलता की चाबी होती है किंतु इसका प्रयोग हम मुश्किल से ही करते हैं। इसके विपरीत हम नकारात्मक भावों को अधिक महत्व देते हैं- दूसरों के प्रति गुस्सा, भड़ास और ईर्ष्या आदि का प्रयोग करते रहते हैं।

341

एक सूखा पेड़ या बिना पत्तियों वाला पेड़ यदि घर के बिल्कुल सामने हो तो अच्छा नहीं माना जाता।

342

केला, पपीता, आम, अनानास और नींबू के पेड़ घर के परिसर में न उगाए जाएँ।

343

बगीचे के दक्षिण या पश्चिम में नारियल तथा नींबू के पेड़ लगाए जा सकते हैं।

ग्रहों की ऊर्जा

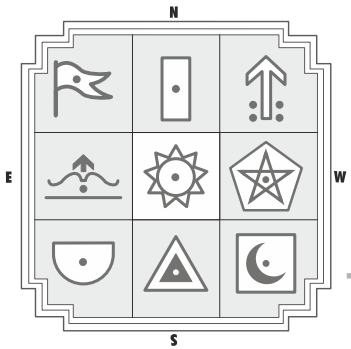

यह प्रयास करके देखें !

नौ ग्रह हम पर बड़ा प्रभाव डालते हैं। अत: अपने कमजोर ग्रह का पता लगाकर उपयुक्त यंत्र और मंत्र द्वारा इसकी शक्ति को बढ़ाएँ। आप एक शक्तिशाली पिरामिड यंत्र भी ले सकते है तथा जानकारी प्राप्त करके बेहतर परिणामों के लिए अपने दैनिक पूजा आदि में इसका प्रयोग करें।

344

जब आप अपनी जमीन से पेड़ उखाड़ रहे हो तो यह निश्चित करें कि तीन महीने के अंदर एक अन्य पेड़ जरुर लगाएँ अन्यथा वह जमीन वास्तु दोषपूर्ण मानी जाएगी।

345

एरण्ड तेल पेड़ बहुवर्क, कचनार और करंज के पेड़ जीवन में अप्रसन्नता पैदा करते हैं। खिरमी के कारण संपत्ति को नुकसान होता है। बेर, अनार, नीली से संपत्ति का नुकसान तथा बच्चे की मृत्यु का कारण बन सकते हैं।

346

एक मंगलकारी पेड़ को भाद्रपद या माघ में कभी नही काटा जाना चाहिए।

जीवंत वास्तु सूत्र

एक पेड़ उगाएँ

क्या आपको मालूम है कि पौधे और विशेषकर पेड़ आपके रक्त चाप को घटाने में मददगार होते हैं, आपके निर्णय काल को सुधारता है मनोयोग को सुधारता है इससे स्कूलों और कार्यस्थलों पर उपस्थिति बढ़ती है तथा उत्पादकता बढ़ती है। आपका आत्मविश्वास और भरोसा बढ़ता है।
चलें, एक पौधा लगाएँ, यह न केवल पर्यावरण लाभ के लिए बल्कि अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए भी अच्छा है।

जीवंत वास्तु सूत्र

परिवर्तन के लिए हमेशा तैयार रहें

विश्व में केवल एक चीज स्थायी है, और वह है- परिवर्तन, वास्तु में भी ऐसा ही है। सफलता के लिए हमें अपने जीवन में सकारात्मक व अच्छे बदलाव के लिए हरदम तैयार रहना चाहिए।

फर्नीचर

347

फर्नीचर को इस प्रकार व्यवस्थित करें कि उससे वर्ग, वृत्त या अष्टभुजा जैसा आकार बन जाए।

348

दक्षिण और पश्चिम दीवारों की तरफ फर्नीचर रखा जाए जिससे कि यह सुनिश्चित होता है कि आप उत्तर और पूर्व की तरफ मुख करके बेठेंगे जो कि आप के स्वास्थ्य मस्तिष्क के लिए अच्छा होगा।

349

अण्डाकार, त्रिभुजाकार या वृत्ताकार जैसे अनियमित आकार वाले फर्नीचर से बचा जाना चाहिए। फर्नीचर का आकार चुनते समय ध्यान रखें कि आयताकार या वर्गाकार फर्नीचर सर्वश्रेष्ठ रहता है।

350

हमेशा फर्नीचर को दीवार से ३ इंच की दूरी पर रखें ताकि सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बिना बाधा जारी रहे।

रंग

351

शयन कक्ष के लिए हलकेरंग उपयुक्त रहते हैं। पिंक, नीला, सलेटी और लवेण्डर के हल्के रंगों से कमरा शांतिदायक लगता है जिससे अच्छी नींद आती है।

352

रसोई में अग्नि को चित्रित करने के उद्देश्य से कुछ लाल या नारंगी झलक होनी चाहिए। चाहे झलक देने वाले ये बर्तन हो या कोई अन्य वस्तु। दीवारों या फर्श के लिए सफेद या नीला रंग उपयुक्त रहेगा।

353

नेत्रों के लिए आनंददायी हल्के और पेस्टल कलर को प्राथमिकता दी जाए, केवल हाइलाटर दीवार या बच्चों के कक्ष में चमकीले रंग प्रयोग किए जाएँ।

चित्र और पोस्टर

354

बैठक कक्ष की उत्तरी दीवार पर लंबे दूर तक फैले जल या जल प्रपात की पैंटिंग हो सकते हैं जो मुख्य जल तत्व के सकारात्मक पहलू को उद्दीप्त करता है।

यह प्रयास करके देखें !

आपकी रसोई, को संपत्ति तथा प्रसन्नता का प्रतीक माना जाता है। अत: अपने घर पर प्रियजनों को खाने पर बुलाना तथा जरुरत मंद एवं गरीबों के लिए भोजन बनाना एवं उन्हें परोसना यह एक आनंदप्रद तरीका है जिससे हम अपनी समृद्धि के आड़े आने वाली अड़चन या रुकावटों को हरा सकते हैं।

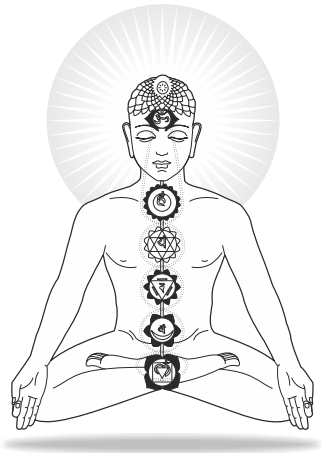

यह प्रयास करके देखें !

घर में रहने वाले लोग महत्वपूर्ण वास्तु पात्र है। कम से कम, तीन माह में एक बार या अधिक संवेदनशील व्यक्ति हो तो माह में एक बार अपने चक्रों को परिशोधित कर लें। किसी विशेषज्ञ से बुरी नजर को हटाने की तकनीक सीख लें। यह आपके जीवन पत में दूसरों के द्वारा जानबूझकर या अनजाने में बनाए गए ब्लोकेज को हटाने में आपकी मदद करेगा।

Use Pyramid 'Cleanzon'

355

पूर्वी दीवार पर उगते सूर्य दिन के उषा काल की पैंटिंग हो सकते हैं।

356

दक्षिणी और पश्चिमी दीवारों पर शक्ति के प्रतीक रुप दर्शानेवाले हाथियों का झूण्ड, गहन हरित पैड़ों की हरियाली वाले ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाले पहाड़ और समरुप चित्र या पैंटिंग्स हो सकते है।

दियासलाईयों को घुमाकर आठ त्रिकोण बनाईए

समाधान प्र. सं. 111 पर

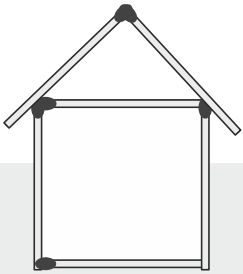

जीवंत वास्तु सूत्र

कुछ नया करें

क्या आप उदास, दुखी या ऊर्जाहीन अनुभव कर रहे हैं? यह इसलिए होता है क्योंकि आप ऊब गए हैं। व्यक्तिगत चुनौति समझकर किसी नए खेल, नृत्य या कोई नई चीज जिसे आप आम तौर पर नहीं करते उन्हें सीखें। बस, इसका प्रयास करें।

357

क्रोध, मृत्यु, आक्रमकता और जीवन के नकारात्मक पहलुओं प्रदर्शित करने वाली पैंटिंग्स को न लगाया जाए। चाहे ये रामायण या महाभारत के दृश्य भी हो तो भी न लगाएँ।

358

अपने पूजा कक्ष की किसी भी दीवार पर स्वर्गीय पूर्वजों के चित्र न लगाए जाएँ। बैठक कक्ष का दक्षिण-पश्चिमी स्थान उनके लिए उचित है।

359

अमूर्त पैंटिंग्स और चित्र जिसको देखने पर कोई अर्थ या उद्देश्य समझ न आए ऐसे चित्रों से बचें क्योंकि इन से दिमाग में भ्रम पैदा होता है।

360

घर के उत्तर-पूर्वी कोने में पैंटिंग्स या किसी अन्य चीज को लटकाए जाने की वास्तु नियमों में अनुमति नहीं है । अत: उत्तर-पूर्वी स्थान को स्वच्छ एवं हल्का रखा जाए।

Now Vaastu corrections can be done without physical shifting or alternations...

पिरामिड वास्तु®

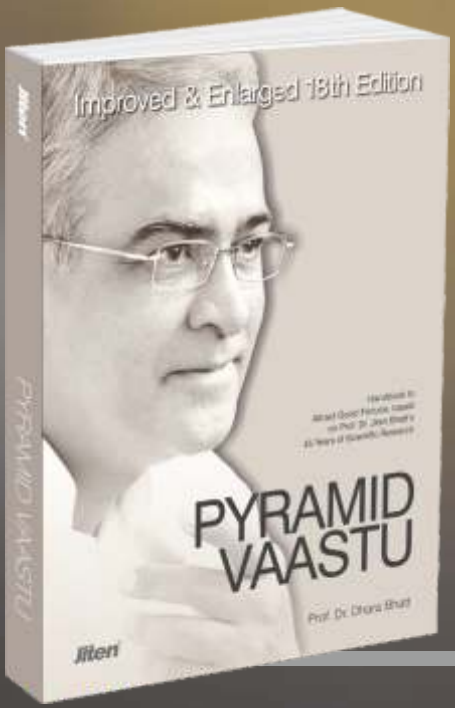

Revolutionary Solution - Pyramid Vaastu!
Here comes a practical and result oriented method - PyramidVaastu. Now you can correct your Vaastu defects with the help of pre-programmed and FaMa charged Pyramid-Yantra. This method virtually makes your house or office Vastu-okay with the energy of pyramids.
Now you can live in the same place and can lead a healthy and happy life.

हिन्दी में भी उपलब्ध

Improved and Enlarged 18th Edition

330 page Handbook to attract Good Fortune, based on 45 Years of Scientific research of Prof. Dr. Jiten Bhatt.

ORDER NOW

Special Price: Rs.450

Get in touch 'Jiten' Center

Jiten® INDIA'S MOST TRUSTED VAASTU NETWORK